कोलकाता। कला मंदिर हॉल में 'रोल ऑफ वुमेन्स इन वर्ल्ड ट्रान्सफॉर्मेशन' कार्यक्रम के दौरान 'नारी सशक्तिकरण' विषयक रैली का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए श्रद्धा अग्रवाल,को-चेयरपर्सन,प.बंगाल, नापराजित मुखर्जी,रिटा.आई.पी.एस., ब्र.कु. चक्रधारी, नादिरा पाथेर्या,न्यायाधीश, रीना वेन्कटेश्वरम,एडिशनल चीफ सेक्रेट्री,साइंस एंड टेक्टनोलॉजी,प. बंगाल सरकार, ब्र.कु. कानन, ब्र.कु. पुण्यवति तथा अन्य।

छोटा उदेपुर-गुज.। 'मूल्यनिष्ठ शिक्षण' विषय पर सेमिनार के दौरान मंच पर उपस्थित हैं कलेक्टर विजय खराड़ी, जिला पुलिस प्रमुख पी.सी. बरांडा, डॉ. हरीश शुक्ला, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. मोनिका तथा अन्य।

धार-म.प्र.। इनर व्हील क्लब द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सत्या, नगरपालिका अध्यक्षा ममता जोशी, अध्यक्षा सुनीता भाटिया तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

मुम्बई-जोगेश्वरी ईस्ट। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की याद में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं डॉ. अरिफ खान,समाजसेवी, नसिरुद्दीन कादरी,ट्रस्टी,जामा मस्जिद, ब्र.कु. बिन्दु,बोरीवली वेस्ट, महेन्द्र पाल सिंह,प्रमुख गन्थी,शेर-ए-पंजाब गुरूद्वारा तथा ब्र.कु. मीना।

मेरठ-उ.प्र.। कलेक्ट्रेट स्थित बचत भवन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रशासनिक अधिकारियों एवं कलेक्ट्रेट कर्मियों के लिए मानसिक शांति एवं तनाव मुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सुनीता, डी.एम. बी. चंद्रकला, अपर आयुक्त गया प्रसाद, ए.डी.एम. प्रशासन दिनेश चंद्र, ए.डी.एम. सिटी मुकेश चन्द्र, सीताराम मीणा तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् उपस्थित हैं ए.सी.जे.एम. निशांत देव, सीनियर डिविज़न फास्ट ट्रैक कोर्ट जज अर्चना यादव, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु. राजपाल।

करो तपस्या, न बनो समस्या

- ब्र.कु. विश्वनाथ

अध्यात्म में विश्वास रखने वाले सभी लोग कहते हैं कि भौतिकवाद ही से सभी समस्याएँ पैदा हुई हैं। हमारी देह की सत्ता भी एक भौतिक सत्ता ही है और इसलिए देहाभिमान भी एक प्रकार का भौतिकवाद ही है। देह के प्रति आकर्षण, जो ही समयान्तर में 'काम' का रूप लेता है, भौतिकता नहीं तो आध्यात्मिकता थोड़े ही है? प्रकृति के रूप-लावण्य के पीछे लट्टू हुआ व्यक्ति प्रकृति ही का पुजारी कहा जायेगा न कि भगवान का भक्त। अंतर केवल इतना ही है कि वह पत्थर की मूर्ति के आगे आत्म-निवेदन न करके वात-पित्त, कफ के पुतले के पीछे पागल हुआ प्राणी है। वह तो एक प्रकार का शराबी है जो हुस्न की बोतल को पीता है और उसी में सुधबुध खोकर 'न खुदा ही मिला न वसाले सनम' (न तो भगवान ही मिला और न मूर्ति ही से मिलाप हुआ) की कहावत के अनुसार सब कुछ लुटा बैठता है।

इसी प्रकार, जो प्रकृति के पदार्थों या पैसों के लोभ के क्षोभ से विक्षिप्त है, वह भी प्रकृति का दास है, माया का मुरीद है। वह नारायण पद को पाने के बजाय ' नकद नारायण' का दीवाना है। वह प्रभु का परवाना न होकर पदार्थों के चक्कर काटता है, उन्हीं की परिक्रमा देता है। वह पकौड़ी और पकवान या कुर्सी और कराही का उपासक है। वह है तो अपने नेत्रों, जिह्वा या पेट का दास और केवल कहता है कि - ' हे प्रभु, मैं आपका दास हूँ।' अत: वह भी पक्का भौतिकवादी है, क्योंकि मटीरियल चाहिए, मनी चाहिए या मर्तबा चाहिए जो कि प्रकृति ही के विभिन्न रूप हैं।

इसी प्रकार, मोह वाला व्यक्ति तो देहधारियों की देह में पूरा ही आसक्त है। जिसमें उसका मोह है, उसके लिए ही वह समर्पित है। वह प्रभु-समर्पित न होकर प्राणी समर्पित है या माटी के पुतलों ही का प्रशंसक है। तब क्या उसे भौतिकवादी नहीं कहेंगे?

कहने का भाव यह है कि जिसे हम देहाभिमान कहते हैं और सब समस्याओं की जड़ मानते हैं, वह देहाभिमान भी भौतिकवाद ही तो है। अत: जब हम यह कहते हैं कि 'आत्मा-निश्चय' ही सभी समस्याओं का समाधान है तो दूसरे शब्दों में हमारे कहने का भाव यही होता है कि अध्यात्मवाद ही सभी समस्याओं को सुलझा सकता है। यदि ऐसा है तो क्या इसका यह अर्थ न हुआ कि अध्यात्मवादी का जीवन भी समस्याओं को हल करने वाला होता है, वह समस्याओं को पैदा करने वाला नहीं होता । उसके सामने जब दूसरे लोग या परिस्थितियां समस्या के रूप में आती हैं तब वह उनका आध्यात्मिक जीवन-दर्शन के द्वारा हल करता है और स्वयं उसका निजी जीवन तो समस्योत्पादक न होकर हलदायक और फलदायक ही होता है।

यदि हम उपरोक्त से सहमत हैं तो हमें यह देखना होगा कि हम, जो अध्यात्मवादी हैं, वह 'समस्या' हैं या 'समाधान'? जिनके साथ हम रहते हैं, जिनके सम्पर्क में हम व्यवहार में आते हैं या जिनके साथ मिलकर हम कार्य अथवा सेवा करते हैं, क्या हम उनके जीवन में समस्या रूप तो नहीं बन जाते? हमारे मन में ईर्ष्या, द्वेष, मन-मुटाव, बदले की भावना, रोष, रोब, डांट-डपट, नाराज़गी और अनुशासनहीनता कहीं उनके जीवन में कठिन समस्या तो नहीं पैदा कर देती? हम उनकी नींद हराम तो नहीं कर देते? उनके लिये 'भूत' या 'कोतवाल' या आतंकवादी तो नहीं बन जाते? उनके निर्मल विचारों को रौंदते हुए, हम उनके मन को ज़ख्मी तो नहीं कर देते? उन्होंने जीवन-यात्रा के लिये जिन इरादों को कार या बस या वाहन के रूप में अपनाया था, उसे अपनी निरीह हरकतों से

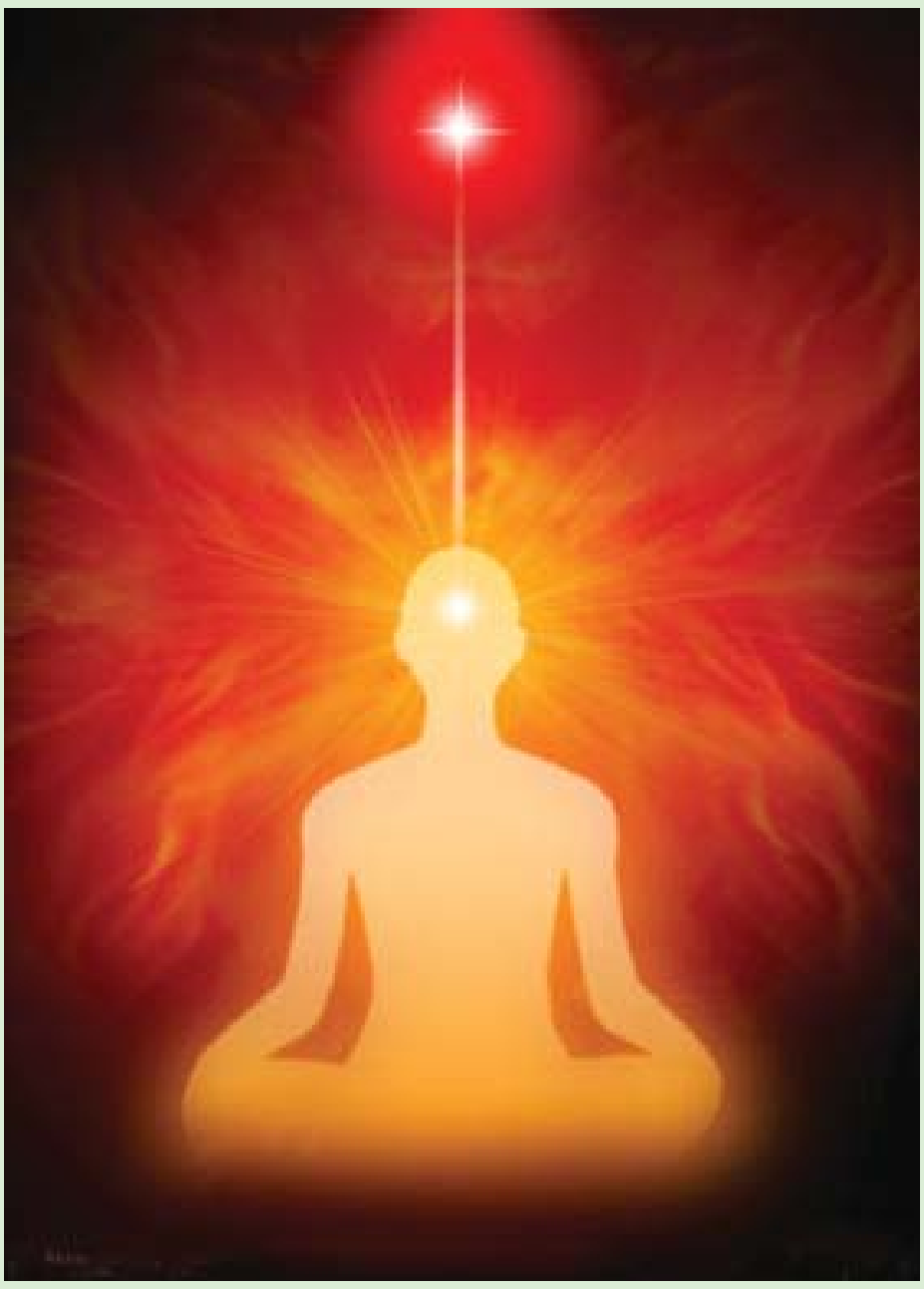

जलाकर खाक करने के निमित्त तो नहीं बनते? यदि हम ऐसा करते हैं तो फिर 'अध्यात्मवादी' किस अर्थ में हुए?

अध्यात्मवाद तो रूह को राहत, आत्मा को आश्वासन, प्यासे को अमृत, तपे हुए को शीतल छांव देता है। वह तो समस्याओं को हल करता है। 'योग' तो जोड़ का नाम है, तोड़-फोड़ का नाम नहीं है। 'ज्ञान' तो औषधि अथवा अमृत है, वह आग लगाने के लिए इंधन नहीं है। आध्यात्मिकता मनुष्य में आत्मियता को विकसित करती है, अकालग्रस्त क्षेत्र की सूखी और अनुपजाऊ भूमि की तरह नहीं है बल्कि आँखों और दिल को तरावट देने वाली तराई और हरियाली की तरह है।

अत: पहले हमें यह देख लेना चाहिये कि हम ताप बुझा रहे हैं, या कहीं तपा तो नहीं रहे? 'तप' शब्द के कई अर्थ हैं। प्राचीन ग्रंथों में एक आख्यान के अनुसार असुरों ने तो 'तप' का यह अर्थ लिया कि तपने और तपाने के बिना संसार में कोई काम नहीं हो सकता। रजोगुणी 'मनुष्यों' ने इसका यह अर्थ लिया कि चहुं ओर अग्नि का ताप हो और ऊपर से सूर्याग्नि हो तो इन पाँचों अग्नियों में स्वयं को तपाना ही तप है। जो सतोगुणी वृत्ति के थे, उन्होंने 'तप' या तपस्या का यह अर्थ लिया कि कम बोलना, मीठा बोलना, धीरे बोलना वाणी का तप है। आत्मिक दृष्टि अथवा गुण-ग्राहक दृष्टि से देखना, यह नेत्रों का तप है। शुभभावना, शुभकामना, निंदा-स्तुति, मान-अपमान में एक समान रहना यह मन का तप है, आदि-आदि। शिव परमपिता ने हमें समझाया है कि बुद्धि, स्मृति एवं संकल्प को एक बीजरूप शिवबाबा में स्थित करना 'तपस्या' अथवा 'योग' है क्योंकि इस जोड़ से जो अग्नि प्रज्वलित होती है, वह विकर्मों को दग्ध करती है।

इन रहस्यों को समझते हुए हमें चाहिये कि हम यह नीति वचन अपना लें कि - 'करो तपस्या, न बनो समस्या!' हम तो समस्याओं का समाधान करने वाले शिव परमात्मा की संतान हैं जो दूसरों को समाधि और समाधान देने वाले हैं और योग का प्रयोग सिखाने वाले हैं। तब भला हम समस्या कैसे बन सकते हैं? अत: 'समाधि और समाधान', 'आत्मा और अवधान' हमारे लिये पालनीय वचन हैं। इनका पालन हमारे लिए अति आवश्यक है।